डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

Hindi Hons.
Part – II
Paper — III

Date:- 09-02-2022

प्रेमचंद का रचना-संसार

प्रेमचंद ने लिखना कब शुरू किया, या उनकी पहली रचना कब छपी, इन बातों को लेकर कुछ अस्पष्टता है। प्रायः इन मुद्दों पर हम अंतः साक्ष्य को महत्व देते हैं और रचनाकार के अपने कहे हुए प्रमाण मानते हैं। परन्तु रचनाकारों की अपनी याददाश्त हर जगह सही और दुरुस्त हो, ऐसा नहीं माना जा सकता। यही बात कुछ अंशों तक मुंशी प्रेमचंद पर भी लागू होती है। अमृतराय इस संदर्भ में प्रेमचंद को उद्धृत करते हुए कहते हैं— "मेरा एक उपन्यास 1902 में निकला और दूसरा 1904 में।" स्वलिखित 'जीवन-सार' में प्रेमचंद ने स्वतः यह लिखा है। इस संदर्भ में अमृतराय की टिप्पणी है— "कुछ अजब नहीं कि मुंशी जी की स्मृति धोखा दे रही हो। 'प्रेमा' का प्रकाशन वर्ष 1907 अंकित है, 'हम खुर्मा व हम सवाब' पर प्रकाशन-वर्ष अंकित नहीं है, पर उसका पहला विज्ञापन 1906 के 'जमाना' में मिलता है और फिर बराबर मिलता है। इससे यह नतीजा निकालना शायद बहुत गलत होगा कि वह किताब सितम्बर, 1906 ई० के आसपास निकली होगी। गरज़ कि मुंशी जी ने बंधकर 'जमाना' में लिखना शुरू कर दिया, और छोटी कहानी तो जैसे सबसे पहले 1907 ई० में ही लिखी,

लेकिन उसके पहले छोटे-छोटे लेखों और समीक्षाओं का सिलसिला बहुत कायदे से चलता रहा।" (कलम का सिपाही)।

लेखकीय जीवन में प्रेमचंद ने जो कुछ लिखा, उसकी सूची निम्नलिखित है—

उपन्यास: हिन्दी में — प्रतिज्ञा, वरदान, सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान और मंगलसूत्र (अपूर्ण)

उपन्यास: उर्दू में — इनमें 'प्रतिज्ञा', 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'कर्मभूमि' और 'गोदान' क्रमशः बेवा, बाजार-ए-हुस्न, गोशा-आफ़ि, चौगने-हस्ती, वर्दा-ए-मिजाज, गबन, मैदान-ए-अमल और गऊदान नाम से प्रकाशित हुए।

नाटक — 'कर्बला', 'रूहानी-शादी', 'संग्राम', 'प्रेम की वेदी'।

निबंध — कुछ विचार-दो भाग, कलम, तेग़ और तलवार।

जीवनियाँ — महात्मा शेख सादी, दुर्गादास।

अनुवाद — तोलस्तोय की कहानियाँ, सुखदास (जार्ज इलियट के साइलेस मैरीनर का अनुवाद) अहंकार, अनातोले फ्रांस के

Scanned by CamScanner

'थाया' का अनुवाद, चाँदी की डिबिया (गाल्सवर्दी के नाटक 'जस्टिस' का अनुवाद, हड़ताल गाल्सवर्दी के 'स्ट्राइक' का अनुवाद, आजाद-कथा (पं० रतनलाल 'सरशार' के 'फिसाना-आजाद' का अनुवाद।

बाल साहित्य — कुत्ते की कहानी, जंगल की कहानियाँ, राम-चर्चा, मनमोदक।

कहानियाँ — हिन्दी और उर्दू में प्रेमचंद की कहानियों के बीसों संकलन समान और अलग-अलग नामों से समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। यह सिलसिला प्रेमचंद के अपने समय में और उनके बाद भी जारी रहा। कलांतर में 'मानसरोवर' शीर्षक संग्रह के आठ भागों में उनकी कहानियाँ एकत्र रूप से छपकर प्रकाशित हुईं। और भी बाद को 'गुप्तधन' शीर्षक से उनकी अनेक अप्रकाशित कहानियाँ भी प्रकाश में आईं।

इधर प्रेमचंद का सारा साहित्य नये सिरे से प्रकाशित हुआ है। 'विविध प्रसंग' शीर्षक से कई भागों में उनके संपादकीय लेख, टिप्पणियाँ, समीक्षाएँ संकलित की गई हैं। इसी तरह 'चिट्ठी-पत्री' शीर्षक के अन्तर्गत उनका पत्राचार संकलित हुआ है। महज बीस सालों की, प्रेमचंद की यह साहित्य-साधना, सचमुच हिन्दी की उपलब्धि है।

Scanned by CamScanner